चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के कथन “कम लिखो, मगर अच्छा लिखो” को सार्थक करने वाले चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म 7 जुलाई, 1883 को जयपुर, राजस्थान में हुआ था। उनके पूर्वज हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा क्षेत्र के गुलेर नामक स्थान के निवासी थे। उनके पिता ज्योतिर्विद महामहोपाध्याय पंडित शिवराम शास्त्री राजसम्मान पाकर जयपुर, राजस्थान में बस गए थे। मात्र 10 वर्ष की आयु में ही गुलेरी जी संस्कृत भाषा के ज्ञान एवं भाषण में अभ्यस्त हो गए थे।

वर्ष 1893 में उन्होंने जयपुर के महाराजा कॉलेज में दाखिला लिया। उन्होंने वर्ष 1899 में कोलकाता विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में मैट्रिक तथा वर्ष 1904 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. की शिक्षा उत्त्तीर्ण की। उन्होंने मेयो कॉलेज अजमेर में अध्यापक पद पर कार्य किया। वे अपने शिष्यों में लोकप्रिय थे। गुलेरी जी के आसाधारण योग्यता से प्रभावित होकर पंडित मदनमोहन मानवीय जी ने उन्हें बनारस बुलाया और हिंदू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर का पद दिलाया।

गुलेरी जी ने अध्ययन और स्वाध्याय द्वारा हिंदी और अंग्रेजी के अतिरिक्त संस्कृत, प्राकृत, बांग्ला, मराठी आदि के साथ ही जर्मन तथा फ्रेंच भाषाओं का ज्ञान भी प्राप्त कर लिया था। उनकी रुचि धर्म, ज्योतिष, इतिहास, पुरात्तव दर्शन, भाषा विज्ञान, शिक्षा और साहित्य से लेकर संगीत, चित्रकला, लोककला, विज्ञान और राजनीति तथा समसामयिक सामाजिक स्थिति तथा रीति-नीति में भी थी।

गुलेरी जी संपादक, निबंधकार तथा कहानीकार थे। उन्होंने बहुत कम रचनाओं के माध्यम से ख्याति अर्जित की। उन्होंने तत्कालीन प्रसिद्ध पत्रिका “सरस्वती” के संपादन के अतिरिक्त जयपुर से “समालोचक” नामक पत्रिका का संपादन भी किया। उनकी कहानी “उसने कहा था” ने सभी कीर्तिमान तोड़ दिए थे। उनका कहानी संग्रह “गुलेरी जी की अमर कहानियां” नाम से प्रसिद्ध है।

उनकी निम्नांकित रचनाएं हैं-

निबंध- कछुआ धर्म, पुरानी हिंदी, देवकुल, संगीत, आंख।

कहानियां- सुखमय जीवन, उसने कहा था, बुद्धु का कांटा।

कविताएं-एशिया की विजय दशमी, भारत की जय, वेनॉक बर्न, आहिताग्नि, झुकी कमान, स्वागत, ईश्वर से प्रार्थना।

12 सितम्बर 1922 को काशी में 39 वर्ष की अल्पायु में ही उनका निधन हो गया।